आत्मिक शक्ति

गुरबाणी अनुसार परमात्मा 'एक' है –

(पृ.1)

साहिबु मेरा एको है ।।
एको है भाई एको है ।। (पृ.350)

साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ।। (पृ.420)

एकै रे हरि एकै जान ।। (पृ.535)

परमात्मा का कोई **'सानी'** (तुल्य) नहीं है –

तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ।।
तूं दीप लोअ पइआलिआ ।। (पृ.74)

तुधु जेवडु मै होरु न कोई ।।
तुधु आपे सिरजी आपे गोई ।। (पृ.112)

तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ।।
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ।। (पृ.130)

तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई
तुहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ।। (पृ.305)

मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ।। (पृ.1098)

परमात्मा **'कर्ता पुरुष'** है, इसलिए समस्त **आत्मिक गुण** अकाल पुरुष की हस्ती या **'अस्तित्व'** में से उत्पन्न हुए हैं –

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ।। (पृ.4)

गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ।। (पृ.163)

गुण का दाता सचा सोई ।। (पृ.1055)

गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ।। (पृ.1055)

जिस प्रकार 'सूर्य' से उत्पन्न अनेक गुणों में से **शक्ति** (energy) भी एक गुण है । उसी प्रकार कर्ता पुरुष के अनेक गुणों में से **'आत्मिक-शक्ति'** भी एक गुण है जो पूरे ब्रह्मांड अथवा **समस्त सृष्टि में प्रविष्ट तथा प्रवृत्त है ।**

अकाल पुरुष **'कर्ता पुरुष'** होने के कारण **'स्वै-प्रकाश'** है । शेष सब कुछ उसकी **'कृति'** है । इसीलिए उसका **'सानी'** और कोई नहीं है तथा वह स्वयं समस्त सृष्टि का **'कर्त्ता'** है और **'सभनां गलां समरथ'** (सर्व शक्ति सम्पन्न) है।

सृष्टि में प्रवृत्त **समस्त शक्तियों का स्रोत अकाल पुरुष ही है ।**

दूसरे शब्दों मे अकाल पुरुष ही दृष्टमान या अदृष्ट समस्त शक्तियों का **'मूल स्रोत'** है । इसीलिए **'इलाही शक्ति'** के अतिरिक्त अन्य कोई **'शक्ति'** है ही नहीं।

अकाल पुरुष की मौज या **'कवाओ'** द्वारा यह **इलाही शक्ति सृष्टि के कण-कण में** –

सर्वत्र-परिपूर्ण है
ओत-प्रोत लिपटी हुई है
सर्व-व्यापक है ।

इस इलाही शक्ति की प्रवृत्ति या प्रकटाव को ही –

हुकुम
रज़ा
भाणा
अमर

कहा गया है ।

इलाही **'हुकुम'** द्वारा ही समस्त सृष्टि –

निर्मित हुई है

उत्पन्न हुई है
पलती है
विकसित होती है
प्रफुल्लित होती है
कायम रहती है
चलती है
लय होती है
पुनः निर्मित होती है ।

इस **इलाही शक्ति का प्रवाह या हुकुम** –

सहज-स्वभाव
स्वतः
गुप्त-रूप से
चुप-चाप

आत्मिक तथा मायकी दोनों मंडलों में प्रवृत्त है, जिससे हम –

बेखबर
अनजान
बेपरवाह
अज्ञानी
लापरवाह
विमुख
मचले

बने हुए हैं ।

यह **सूक्ष्म, गुप्त, अदृष्ट 'इलाही शक्ति'** दिन-रात, प्रतिक्षण, सदैव इलाही **'हुकुम' में कार्यरत होती हुई, अनेक अलौकिक आश्चर्यजनक कौतुक कर रही है ।**

इस बात को स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं –

1. **'बिजली'** की शक्ति का स्त्रोत **'बिजली घर'** (power house) है तथा

इस बिजली का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है, जैसे –

बल्ब
कुक्कर
प्रैस
हीटर
कूलर
टेप रिकार्डर
टेलीफोन
रेडियो
टेलीविज़न
फ्रिज
मशीनें आदि ।

यदि **'बल्ब'** समझे कि **'रौशनी'** उसका **अपना प्रकाश** है, तब यह उसका बहुत बड़ा **भ्रम-भुलाव** है ।

यह रौशनी तो **'बिजली घर'** (power house) से आती है तथा बल्ब तो बिजली की शक्ति के प्रकटाव का एक **साधन** या माध्यम ही है ।

2. **बच्चा** एक 'वीर्य कण' (sperm) से बनता है तथा 9 मास माँ के पेट के भीतर कठिन परिस्थिति में, जठर अग्नि में **'आत्मिक शक्ति' द्वारा** उसका **पालन होता है ।** जब यह 'बच्चा' संसार में जन्म लेता है तब उसकी सम्भाल के लिए 'माँ' के हृदय में **'माँ-प्यार' अथवा 'ममता' उत्पन्न हो जाती है** तथा मां के वक्ष में दूध भर आता है, जिससे बच्चे (baby) की परवरिश होती है । जब बच्चा कुछ बड़ा होता है, तब उसके मुँह में **दाँत निकल आते हैं** ताकि वह खुराक खा सके। जब तक बच्चा (baby) **आत्म-निर्भर नहीं होता,** उसकी सम्भाल तथा परवरिश **'माँ-प्यार' के माध्यम से होती रहती है ।**

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ।।
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ।।
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ।।
भरि जोबन भोजन सुख सूध ।। (पृ.266)

बच्चे के 'गर्भ-धारण' से लेकर बच्चे के पालन-पोषण तथा देख-रेख की **समस्त क्रिया अकाल पुरुष की 'आत्मिक शक्ति'** द्वारा ही होती है, जिसमें **'इलाही हुकुम'** अनुसार, 'माँ' को **हथियार या साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है । इस सारी 'क्रिया' में माँ की अपनी कोई 'शक्ति' या 'अक्ल' काम नहीं करती ।** बच्चे के पैदा होने के पश्चात भी, अकाल पुरुष के हुकुम अनुसार,**'इलाही शक्ति' ही, माँ-प्यार' के रूप में, बच्चे का पालन पोषण करती है ।**

यदि माँ समझे कि यह सारी क्रिया वह स्वयं अपनी शक्ति तथा अक्ल द्वारा करती है, तब यह उसका दीर्घ **भ्रम-भुलाव** है ।

3. हमारे शरीर के समस्त अंगों अथवा दिमाग, आँखों, जीभ आदि के माध्यम से जो **'शक्ति'** प्रकट होती है, उसका **'स्त्रोत' हमारी अन्तर आत्मा में 'इलाही शक्ति' ही है ।**

तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ।। (पृ.350)

इस इलाही शक्ति अथवा **'इलाही ज्योति'** के बिना तो हम केवल **मृत मास पिंड ही हैं ।**

जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि
विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ।। (पृ.138)

यह **'इलाही शक्ति'** सृष्टि के कण-कण में प्रवृत्त है तथा इलाही हुकुम अनुसार **भाँति-भाँति के रंग-रूपों तथा प्रकारों में प्रकाशमान हो रही है, जैसे** –

बच्चे का माँ के उदर में पलना,
पौधों का उगना तथा फलना-फूलना,
फूलों के सौन्दर्य, रंग तथा सुगन्धि में,
फलों के भिन्न-भिन्न रस तथा स्वाद में,
जल के प्रवाह में,
हवा के वेग में,
पर्वतों की ऊँचाई में,
समुन्द्र की गहराई में,
आकाश के विस्तार में, आदि ।

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ।।
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ।।
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ।।1।।रहाउ।।
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ।।
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ।।
आपे बहु बिधि रंगुला सरवीए मेरा लालु ।। (पृ. 23)

एक रूप जा के रंग अनेक ।। (पृ. 295)

जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ।।
अनिक भांति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ।। (पृ. 296)

एकहि आपि अनेकहि भाति ।। (पृ. 238)

आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ।।
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ।। (पृ. 726)

परन्तु **'इलाही शक्ति' की गुप्त 'सहज चाल' के इन 'कौतुकों' तथा चमत्कारों की ओर** हमारी मोटी स्थूल बुद्धि का **ध्यान ही नहीं जाता तथा न ही हमें ध्यान देने की आवश्यकता प्रतीत होती है ।**

जब इस **इलाही शक्ति की 'सहज चाल' में हम अपने अहम्ग्रस्त मन की मर्जी मिला देते हैं,** तब हम **इलाही हुकुम में विध्न डाल देते हैं ।**

हमारे कर्मों के पीछे **'शक्ति'** तो **'इलाही रवानगी'** की होती है, परन्तु हम अज्ञानता में इस शक्ति को **मैं-मेरी की रंगत चढ़ा देते हैं, जिस कारण हम 'कर्मबद्ध' होकर 'जो मै कीआ सो मै पाइआ'** अनुसार **परिणाम भोगते हैं।**

यदि **अहम् की रंगत** में कोई अलौकिक चमत्कार हो भी जाये, तब हम उसे **अपनी ही 'प्राप्ति' समझकर फूले नहीं समाते** –यद्यपि **हमारी समस्त प्राप्तियों के पीछे इलाही शक्ति ही काम कर रही होती है ।**

इन विचारों से यह स्पष्ट होता है कि इस **गुप्त इलाही शक्ति को 'भुला'** कर या इससे विमुख होकर अपनी **'अहम् ग्रस्त' मानसिक शक्ति को ही कर्ता समझना**, जीव का –

भ्रम-भुलाव है
अज्ञानता है

कूड़ है
अहंकार है
पाखण्ड है
ढिठाई है ।

हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ।।
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ।। (पृ. 39)

हउ हउ करे तै आपु जणाए ।।
बहु करम करै किछु थाइ न पाए ।। (पृ. 127)

हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ।।
जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ।। (पृ. 242)

हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ।। (पृ. 252)

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ।।
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ।।
जब इह जानै मै किछु करता ।।
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ।। (पृ. 278)

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ।।
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ।। (पृ. 974)

'मायकी मंडल' में समस्त जीवों की **'जीवन रौं'** या **'जीवन-शक्ति'** का **'स्रोत'** सुर्य है । परन्तु सुर्य को भी **'जीवन शक्ति', 'इलाही शक्ति'** से ही मिलती है ।

इसी प्रकार अनेक –

ब्रह्मांड
सूर्य
चन्द्रमा
आकाश-गंगा
चौरासी लाख योनियों
समस्त जीवों
कण-कण

को **जीवन, एक मात्र 'इलाही शक्ति' के 'स्रोत' अकाल पुरुष से मिल रहा है ।**

जीवन मै जल मै थल मै सभ रूपन मै सभ भूपन माहीं ।।
सूरज मै ससि मै नभ मै जह हेरौ तहां चित लाइ तहा ही ।।
पावक मै अरु पौन हूं मै पिृथवी तल मै सु कहां नहि जांही ।।
बयापक है सभ ही के बिखै कछु पाहन मै परमेस्वर नाही ।।

(पातशही- 10)

जिस प्रकार सुर्य में से निकली **'किरण'** तो शक्तिमान होती है, परन्तु ज्यों-ज्यों यह किरण **आकाश के प्रदूषित वायुमंडल या बादलों में से गुजरती है तो इसकी शक्ति कम होती जाती है ।**

इसी प्रकार हमारी **अन्तर-आत्मा में 'इलाही ज्योति' की 'आत्मिक शक्ति' जब अहम्ग्रस्त विचारों के बादलों, मायकी अज्ञानता की भ्रम-भ्रान्तियों** तथा **तुच्छ वासनाओं की मैली 'तहों' में से गुजरती है,** तब इस अनन्त **आत्मिक शक्ति का बाहरमुखी प्रकाश कम होता जाता है।**

यही कारण है कि माया की अज्ञानता में **विखण्डित हुए मन 'निर्बल' हो जाते हैं,** जिस द्वारा वह **अहम् अधीन** कर्म करते हैं **जो सार्थक नहीं होते ।**

मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ।।
जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ।। (पृ. 68)

मनमुखु करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ।। (पृ. 87)

मनमुख करम करे अहंकारी ।।
जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ।। (पृ. 130)

नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै
दरगह होइ खुआरु ।। (पृ. 1423)

दूसरी ओर निर्मल मन वाले गुरुमुख जनों के चिंतन, **वचन तथा दृष्टि में अनन्त आत्मिक शक्ति काम करती है –**

नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ।।
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ।। (पृ. 316)

कोटि कोटि अघ काटनहारा ।।
दुख दूरि करन जीअ के दातारा ।।
सूरबीर बचन के बली ।।
कउला बपुरी संती छली ।। (पृ. 392)

निसि बासुर नरविअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ।।
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो **इकि साध बचन अटलाधा ।।**
अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ।
चारि बिनासी खटहि बिनासी **इकि साध बचन निहचलाधा ।।**
राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ।।
द्रिसटिमान है सगल बिनासी **इकि साध बचन आगाधा ।।** (पृ.1204)

गुरू, अवतार, महापुरुष अपनी **'मन मर्जी' से या अपने स्वार्थ के लिए इस इलाही शक्ति का प्रयोग नहीं करते** तथा इस **'आत्मिक शक्ति के प्रवाह' या हुकुम में दखल नहीं देते ।**

वह अपने **'प्रीतम'** अकाल पुरुष की खुशी या **'रज़ा'** में ही **'आत्मिक-शक्ति'** की **'इलाही दात'** का प्रयोग करते हैं तथा **'हुकुम रजाई चलणा'** के उपदेश का पालन करते हैं ।

सोई कराइ जो तुधु भावै ।।
मोहि सिआणप कछू न आवै ।।.....
मेरा मात पिता हरि राइआ ।।
करि किरपा प्रतिपालण लागा करी तेरा कराइआ ।। (पृ.626)

बोले साहिब कै भाणै ।।
दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ।। (पृ.629)

जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ।। (पृ.508)

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी
होरु किआ जाणा गुण तेरे ।। (पृ.919)

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ।। (पृ.993)

मेरा कीआ कछू न होइ ।।
करि है रामु होइ है सोइ ।। (पृ.1165)

दृश्टमान संसार अथवा मायकी मंडल में **मन की एकाग्रता द्वारा** अनेक प्रकार की **मानसिक शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं,** जैसे –

रिद्धि-सिद्धि
नाटक-चेटक

तांत्रिक जादू
करामात
वाक्-सिद्धि
भविष्य वाणी
वर-श्राप
अन्तरयामिता
भूतों के जादू
मदारियों के तमाशे, आदि ।।

यह समस्त **मानसिक शक्तियाँ मन की एकाग्रता** में से उत्पन्न होती हैं, जिन्हें हम **भ्रम-भुलाव के कारण 'आत्मिक शक्ति' ही समझ लेते हैं** तथा **अभिमान में फूले नहीं समाते ।** यह **'मानसिक शक्तियाँ'** हमारे आत्मिक जीवन में सहायक होने की अपेक्षा – **हमें और अधिक दूर ले जाती हैं ।**

क्योंकि इन रिद्धि-सिद्धियों की शक्ति से उनके **सूक्ष्म अहम् को 'फूँक' मिलती रहती है** तथा **वह 'करामात' दिखाने लग जाते हैं और 'वर-श्राप' भी देने लगते हैं,** जिससे जरूरतमंद जनता आकर्षित हो जाती है । इस प्रकार सहज-स्वभाव, अचेत ही, जिज्ञासु के मन में सूक्षम **'मान-सम्मान' की भावना आ जाती है ।** इस मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा से उसको **मानसिक 'अहम्' का 'नशा' चढ़ जाता है** तथा वह भद्र-पुरुष, साधू, संत, महंत, आचार्य, गुरू, अवतार, श्री '108' आदि कहलवाने लगता हे ।

इस 'सूक्ष्म अहम्' के 'नशे' का आनन्द लेने के लिए वह योग साधना द्वारा सैकड़ों वर्ष **आयु बढ़ा लेते हैं ।** इस प्रकार वह निश्चित ही **ऊँचे-पवित्र आत्मिक भक्ति के आदेश तथा उद्देश्य से दूर होते जाते हैं ।**

रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ।। (पृ.593)

कबीर सिख सारवा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ।।
चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु ।। (पृ.1369)

रिधि सिधि निध पारवंडि बहु तंत्र मंत्र नाटक अगलेरे । (वा.भा.गु. 5@7)

संनिआसी दस नाव धरि जोगी बारह पंथ चलाइआ ।
रिधि सिधि निधि रसाइणां तंत मंत चेटक वरताइआ । (वा.भा.गु. 39@16)

इस **मान-सम्मान के सूक्ष्म 'नशे'** में जिज्ञासु इतना गलतान तथा मदहोश हो जाता है कि वह अपनी **'रूहानी मंजिल' को पुर्णतया भूल जाता है** – जिससे उसकी अपनी **आत्मिक उन्नति रुक जाती है** तथा वह 'खड़दी कला' (गिरावट) में विचरण करता हुआ धीरे-धीरे, अनजाने ही **रसातल की ओर बहता जाता है।** ऐसे जिज्ञासु को अपने इस मानसिक तथा आत्मिक पतन का **अहसास ही नहीं होता।**

इस प्रकार वह डेरा, सम्प्रदाय, ठाठ-बाठ का 'संकीर्ण धार्मिक रुतबा' रचकर इसी में गलतान होकर, **गृहस्थियों की भाँति,** अहम् के **मान-सम्मान के नशे में मस्त हो जाता है** तथा अपनी **आत्मिक मंजिल भूल जाता है ।**

इस श्रेणी में 'वली कंधारी','नूरशाह','गोरख नाथ' जैसे अनेक योगी आते हैं।

इन **'मानसिक शक्तियों' के पीछे 'अहम्' का ही प्रकटाव तथा संचार होता है, जो मन की तुच्छ वासनाओं की रंगत वाला होता है,** जैसे –

ईर्ष्या
द्वेष
तअस्सुब
वैर-विरोध
डाह
स्वार्थ
अहम् आदि ।

यह अहम् ग्रस्त 'मानसिक शक्तियाँ' ही संसार की मानसिक 'ग्लानि' का कारण हैं, चाहे वह –

योग-साधन हों
तांत्रिक हों
राजसी हों
शारीरिक हों
दिमागी हों
वैज्ञानिक हों ।

इन मानसिक या **दिमागी तथा वैज्ञानिक शक्तियों** ने जहाँ हमें शारीरिक तथा मानसिक सुख-आराम प्रदान किये हैं, वहाँ दूसरी ओर हमारे जीवन को –

मलिन
गँदला
व्यभिचारी
झूठा
फरेबी
स्वार्थी

बना दिया है, जिस कारण हमारे जीवन में से नेक, ऊँचे **पवित्र दैवीय भाव** अलोप हो रहें हैं ।

आज से 500 वर्ष पूर्व गुरू नानक साहिब ने दुनिया की इस मानसिक दशा का यूँ वर्णन किया है –

सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कुड़ु फिरै परधानु वे लालो ।। (पृ. 722)

ज्यों-ज्यों **'अहम् ग्रस्त तीक्ष्ण बुद्धि' द्वारा हमारी मानसिक तथा वैज्ञानिक शक्तियाँ बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों हमारा 'मैं-मेरी' का भ्रम-भुलाव तीव्र होता जाता है** – जिस द्वारा हमारा मन और भी मलिन होता जाता है । इसी कारण संसार में **मानसिक ग्लानि, कम होने की अपेक्षा, बढ़ती जा रही है ।** तथा **समस्त 'सभ्यता' का भी पतन हो रहा है ।**

Power corrupts – absolute power corrupts absolutely.

जब आकाश में बादल छा जाते हैं, तब हम सुर्य के प्रकाश तथा शक्ति से वंचित हो जाते हैं ।

इसी प्रकार जब हमारे मन पर **अहम् ग्रस्त अज्ञानता के बादल छा** जाते हैं, तब हम **आत्मिक प्रकाश अथवा आत्मिक ज्ञान तथा आत्मिक शक्ति से वंचित हो जाते हैं ।**

आकाश में बादल तो थोड़े समय के लिए आते हैं तथा फिर धूप निकल आती है, परन्तु **अहम् की अज्ञानता या द्वैत भाव के भ्रम-भुलाव के काले-घने 'बादल' हमारे मन पर अनेक जन्मों से छाये हुए हैं, जिस कारण हम**

अकाल पुरुष के 'अस्तित्व' तथा उसकी आत्मिक शक्ति से –

अनजान
लापरवाह
विमुख
नास्तिक

हो रहे हैं तथा **'अहम् ग्रस्त' बादलों के भ्रम-भुलाव में तुच्छ वासनाओं वाला जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।**

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ।। (पृ.133)

अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ।। (पृ.220)

मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माया करि बाधे ।।
जह जानो सो चीति न आवै अहंबुधि भए आंधे ।। (पृ.402)

हमारी इस **मानसिक अवस्था का मूल कारण** हमारे –

अहम् ग्रस्त विचार
गलत धारणाएँ
आत्मिक अज्ञानता
मानसिक भ्रम-भुलाव
मनमुखता
श्रद्धा-हीनता

(ईश्वर की) **'भूल' ही है ।**

'अकाल पुरुष' तथा उसकी **इलाही शक्ति** के विषय में हमारे ख्याल, निश्चय, श्रद्धा-भावना, ज्ञान आदि –

सुने-सुनाये
समझे-समझाये
पढ़े-पढ़ाये
नाम – मात्र
फोकट

होते हैं, जो हमारे **दिमागी दायरे तक सीमित होते हैं** तथा मुसीबत आने पर शीघ्र ही तितर – बितर होकर **अलोप हो जाते हैं ।**

हमारी यह **मानसिक अज्ञानता अथवा 'भूल' हमारे मन में जन्मों-जन्मों के अभ्यास द्वारा धँस-बस-रस कर समा चुकी है तथा हमारे** प्रत्येक –

ख्याल
चिंतन
कल्पना
भावना
मनोभाव
निश्चय
श्रद्धा
फैसले
कर्म

में सहज-स्वभाव 'मैं-मेरी' द्वारा प्रवृत तथा प्रकट हो रही है ।

यदि हम **अकाल पुरुष की उपस्थिति तथा उसकी आत्मिक शक्ति का लाभ उठाना चाहते हैं,** तो हमें –

'भूल'
में से निकलकर
'याद'

अथवा **'सिमरन' या 'शबद सुरति कमाई' करनी पड़ेगी ।**

दूसरे शब्दों में –

'मैं-मेरी'
के भ्रम-भुलाव में से निकलकर
'तूं-तेरी'

का अभ्यास करना पड़ेगा ।

ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि
तूंही तूंही मोहिना ।।

कारन करना धारन धरना
एकै एकै सोहिना ।। (पृ.407)

कबीर तूं तूं करता तू हुआ मुझ महि रहा न हूं ।।
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ।। (पृ.1375)

जलस तुही ।।थलस तुही ।। नदिस तुही ।। नदसु तुही ।।
बिछस तुही ।। पतस तुही ।। छितस तुही ।। उरधस तुही ।।
भजस तुअं ।। भजस तुअं ।। रटस तुअं ।। ठतस तुअं ।।
जिमी तुही ।। जमा तुही ।। मकी तुही ।। मका तुही ।।
अभू तुही ।। अभै तुही ।। अछू तुही ।। अछै तुही ।।
जतस तुही ।। ब्रतस तुही ।। गतस तुही ।। मतस तुही ।।
तुही तुही ।। तुही तुही ।। तुही तुही ।। तुही तुही ।।

(अकाल उसतति पा. 10)

इस प्रकार **'तूं-तूं करता तूं हूआ'** अनुसार अभ्यास कमाई करते हुए हमारे मन की **'मैं-मेरी' का भ्रम-भुलाव कम होता जाता है अथवा 'अहम' का 'अभाव' होता जाता है** तथा धीरे-धीरे हमें अन्तर-आत्मा में **आत्मिक प्रकाश की झलकें दिखाई देने लगती हैं ।**

ज्यों-ज्यों **'शब्द-सुरति अभ्यास कमाई'** द्वारा हमारे मन की **'मैल'** कम होती जाती है, त्यों-त्यों हमारी **अन्तर-आत्मा में 'अनुभव'** का **'प्रकाश'** होता जाता है । इस प्रकार **'शबद-सुरति लिव लीन'** होकर **'गुरू सबदी गोबिंद गजिया'** हो जाता है । इस दशा में **'मैं-मेरी'** का **'अभाव'** हो जाता है तथा **'अनुभवी मन'** में से **'तूंही-तूंही'** की पुकार सहज स्वभाव निकलती है ।

हम किछु नाही एकै ओही ।।
आगै पाछै एको सोई ।। (पृ.391)

हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ।।
ओति पोति नानक संगि बसेरा ।। (पृ.739)

हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ।। (पृ.779)

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ।।
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ।। (पृ.1367)

इस आत्मिक शक्ति के प्रकाश का दामनिक 'जलवा' अनन्त, अलौकिक तथा असचरजो असचरज (आश्चर्यजनक) **होता है,** जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता ।

रूप अनूपु अचरजु है दरसन द्रिसटि अगोचर भाई । (वा.भा.गु. 7@16)

अदभुत परमदभुत बिसमै बिसम
असचरजै असचरज अति अति है । (वा.भा.गु. 25)

दरसन जोति को उदोत असचरज मै
तामै तिल छबि परमदभुत छकि है
देखबे कौ द्रिसटि न सुनबे कौ सुरति है
कहिबे कौ जिहवा न गयान मै उकति है । (वा.भा.गु. 140)

जब हमारे निर्मल मन में आत्म प्रकाश होता है, तब इस प्रकाश के **दामनिक 'तेज'** को हमारा मन **सह नहीं पाता ।** मन की इस दशा का वर्णन यूं किया गया है ।

दरसन देखत ही सुध की न सुध रही
बुधि की न बुधि रही मति मै न मति है । (वा.भा.गु. 25)

सतिगुरू की अपार बख्शिश तथा कृपा दृष्टि द्वारा ही **यह आत्मिक दृढ़ अवस्था प्राप्त होती है तथा साध संगत के पवित्र-पावन वातावरण में संभाली या धैर्यपूर्वक सहन की जा सकती है ।**

नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ।।
अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ।। (पृ- 701)

गुरमुखि सुखफलु साधसंग सबदु सुरति लिव अलख लखाइआ ।
पिरम पिआला अजरु जराइआ । (वा.भा.गु. 16@11)